DATE : / /

Public Finance

अर्थ (Meaning) -

सरकार की वित्त व्यवस्था एक सार्वभौमिक पहलु है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति सरकार की सेवाओ से कुछ लाभ प्राप्त करता है तथा उन्हे थोड़ा सा अंशदान भी करता है। सरकार की कुल आय और कुल व्यय देश के किसी व्यक्ति की तुलना में काफी बड़े है। सार्वजनिक व्यय मात्रा में ही बड़ी नही, बल्कि वह तीव्र दर से वृद्धि कर रहा है।

डाल्टन का मत है कि "राजस्व उन विषयो में से एक है जो अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र के मध्य एक सीमा-रेखा की भांति है। इसका सम्बन्ध सार्वजनिक संस्थाओ की आय एवं व्यय तथा एक दूसरे के समायोजन के साथ होता है।"

राजस्व की अवधारणा एवं परिभाषाये (Concept and Definitions of Public Finance)

राजस्व अर्थशास्त्र का एक महत्वपूर्ण भाग है, जिसका अभिप्राय "सरकार की प्रक्रिया में आयगत व्ययो के चारो ओर जटिल समस्याओं के केन्द्रीकरण से है।" प्रो० शिराज का मत है कि राजस्व उन सिद्धान्तो का अध्ययन है, जिनके अनुसार राजकीय पदाधिकारियों के कोषो का एकत्रीकरण एवं व्यय होता है।"

(अ) अत्यधिक विस्तृत परिभाषाएं -

① सी० एफ० बेस्टबत - "राजस्व राज्य की लोक सत्ताओ के आय एवं व्यय, उनके पारस्परिक सम्पर्क तथा वित्तीय प्रशासन व नियंत्रण से सम्बन्धित रखता है।"

② आदम्स - "प्रो० आदम्स "इसे "वित्त का विज्ञान कहते

Scanned with CamScanner

है तथा इसे सार्वजनिक व्यय तथा सार्वजनिक आय के अनुसन्धान के रूप में बताते है।"

③ श्रीमती यू. के. हिक्स – "राजस्व का मुख्य विषय ऐसी विधियो का अध्ययन एवं परीक्षण करना है, जिसके द्वारा शासन संस्था मांग की सामुहिक सन्तुष्टि की व्यवस्था करती है तथा इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए आवश्यक कोष प्राप्त करती है।"

④ प्रो० फिण्डले शिरास – "राजस्व ऐसे सिद्धान्तो का अध्ययन है जो सार्वजनिक सत्ताओ के व्यय एवं कोषो की प्राप्ति से सम्बन्धित है।"

⑤ डा० डाल्टन – "राजस्व के अन्तर्गत सार्वजनिक सत्ताओ के आय एवं व्यय एवं उनका एक दूसरे से समायोजन का अध्ययन किया जाता है। राजस्व के सिद्धान्त ऐसे सामान्य सिद्धान्त है, जिन्हें इन विषयो से सम्बन्धित किया जाता है।"

आलोचना (Criticism)

(i) सार्वजनिक संस्थाओ के अन्तर्गत सार्वजनिक कम्पनियां, सार्वजनिक शिक्षा संस्थाये आदि ही आती है जबकि राजस्व में केवल राज्य की क्रियाओ को सम्मलित करते है।

(ii) यदि सभी प्रकार के आय और व्यय को राजस्व में सम्मलित किया गया तो राजस्व एक अनिश्चित विज्ञान हो जायेगा।

(iii) बैस्टेबल आदि अर्थशास्त्रियों ने साधन शब्द का प्रयोग किया है परन्तु साधन शब्द अस्पष्ट है।

(B) विस्तृत परिभाषाये (Wide Definitions)

⑥ फ्लैटन – "राजस्व वह विज्ञान है जो राजनीति की उन

PAGE NO.
DATE / /

क्रियाओं का वर्णन करता है जिसे राजस्व के उचित कार्यों के लिए मौद्रिक साधनों को प्राप्त करने एवं प्रयोग करने में उपयोग किया जाता है।"

⑦ प्रो० एम० स्मिथ - " राज्य व्यय एवं राज्य आय के सिद्धांत एवं स्वभाव के अनुसन्धान को राजस्व कहते हैं"

⑧ लुट्ज - " सार्वजनिक या शासकीय कार्यों को पूर्ण करने के लिए आवश्यक साधनों का प्रावधान, संरक्षण एवं व्यय करने का अध्ययन ही राजस्व का विषय है"

⑨ टेलर - " सरकारी संस्था के अन्तर्गत संगठित रूप में जनता के वित्त का व्यवहार ही राजस्व है। इसमें केवल सरकारी वित्त का अध्ययन किया जाता है"

आलोचनाएं - (Criticisms)

① इन परिभाषाओं में सरकार के सभी आय एवं व्यय तथा मौद्रिक व अमौद्रिक राजस्व के अध्ययन को सम्मिलित किया गया है अमौद्रिक आय तथा व्यय अनिश्चितता उत्पन्न करता है।

② इस वर्ग की परिभाषाये संकुचित है, क्योंकि इसमें केवल राज्य की आय एवं व्यय को ही राजस्व के क्षेत्र में सम्मिलित करते हैं।

③ इन परिभाषाओं में आय और व्यय का अर्थ अनिश्चित है प्रत्येक राज्य के आय एवं व्यय अमौद्रिक एवं मौद्रिक रहते हैं जिनका व्यय राजस्व में किया जाता है।

स) संकुचित एवं संकीर्ण परिभाषाये

① मेहता एवं अग्रवाल - " राजस्व में सरकार के मौद्रिक एवं साख साधनों के अध्ययन को सम्मिलित किया जाता है।"

Scanned with CamScanner

PAGE NO.:
DATE: / /

राजस्व के क्षेत्र (Scope of Public Finance)

राजस्व की विषय वस्तु को पांच भागो में बांटा गया है तथा यह विज्ञान व कला दोनो ही है। आधुनिक युग में राजस्व का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत हो गया है राजस्व के विषय क्षेत्र को परिभाषित करते हुए डाल्टन का मत है कि "राजस्व में मुख्य विभाजन सार्वजनिक आय एवं सार्वजनिक व्यय के महत्व है. जो कि विषय की दो समान शाखाओं का निर्माण करता है। विशेष समस्याओं को जन्म देने के कारण सार्वजनिक ऋण को एक पृथक् शाख के रूप में माना जाता है।"

हैरोल्ड ग्रोव्स के अनुसार "राजस्व खोज की वह शाखा है जो कि सरकार की आय एवं व्यय से सम्बन्धित है. वर्तमान समय में उसके चार भाग हैं - राजकीय आय, ऋण एवं राजकोषीय व्यवस्था सम्ब-धी समस्याएं जैसे.राजकोषीय प्रबन्ध एवं राजकोषीय नीति"।

डाल्टन का मत है कि "राजस्व अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र की सीमा पर स्थित है।"

राजस्व - विज्ञान या कला (Public finance - Science or Art)

राजस्व के स्वभाव में विज्ञान एवं कला के अध्ययन को सम्मिलित किया जाता है।

विज्ञान क्या है -(What is Science)

"विज्ञान किसी वस्तु के पूर्ण मान को आंकता है और उसका आधार, सतर्क प्रयोग, ध्यानपूर्वक निरीक्षण एवं ठीक-ठीक विश्लेषण करता है।" विज्ञान दो प्रकार का होता है - वास्तविक विज्ञान (Positive Science) एवं (b) आदर्श विज्ञान (Normative Science)

Scanned with CamScanner

वास्तविक विज्ञान में केवल 'वस्तुस्थिति' का अध्ययन किया जाता है। इसके विपरीत, आदर्श विज्ञान केवल वास्तविक अवस्था का ही अध्ययन नहीं करते। बल्कि अपना आदेश भी स्थापित करते हैं। दोनों में वस्तु स्थिति एवं आदेश का [illegible] अन्तर पाया जाता है।

राजस्व विज्ञान है - प्रो० प्लेहन ने राजस्व को विज्ञान माना है और इस सम्बन्ध में निम्न तर्क प्रस्तुत किये हैं।

(I) कल्पना करना - राजस्व द्वारा किसी भी प्रकार की वस्तु स्थिति के सम्बन्ध में निश्चित विवेचन करके उसके विषय में पूर्वानुमान लगा सकते हैं।

(II) घनिष्ट सम्बन्ध - राजस्व का सम्बन्ध राजनीतिशास्त्र एवं अर्थशास्त्र जैसे विज्ञानो से होने से भी इसे विज्ञान कहा जा सकता हैं।

(III) नियमपूर्वक संग्रह - राजस्व के सिद्धान्त को एवं तथ्यो को नियमपूर्वक संग्रह किया जाता है। अनेक नियम केवल इसी विज्ञान में लागु किये जाते हैं।

(IV) वैज्ञानिक नियम - राजस्व में वैज्ञानिक खोजो के सभी नियम का [illegible] प्रयोग होने से इसे विज्ञान कहा जा सकता हैं।

(V) मानवीय ज्ञान से सम्बन्ध - राजस्व का सम्बन्ध सदैव मानवीय ज्ञान के एक विशेष क्षेत्र से होने के कारण इसे विज्ञान माना गया हैं।

कला से आशय -

कला का अभिप्राय किसी भी कार्य करने के ढंग को ज्ञात करना है। कला का उद्देश्य सही दिशा की ओर प्रवृत्ति दिखाना है।

राजस्व कला के रूप में :-

PAGE NO.:
DATE: / /

राजस्व के कला पक्ष को स्वीकार करते हुए प्रो० लेहन का मत है कि इसमें राजस्व से सम्बन्धित समस्त तथ्यों को भली प्रकार से संग्रह किया जा सकता है और उससे यह निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं जो कि अर्थशास्त्र और राजनीति शास्त्र से नहीं निकाले जा सकते हैं।

राजस्व की विषय सामग्री

"राजस्व में मुख्य विभाजन सार्वजनिक आय एवं सार्वजनिक व्यय के मध्य है जो कि विषय की दो समान रूप शाखाओं का निर्माण करता है। सार्वजनिक ऋण को एक पृथक शाखा के रूप में माना जाता है, क्योंकि अनेक विशेष समस्याओं को जन्म देती है।"

Scanned with CamScanner